दिनांक :- 15-04-2020
कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)
स्नातक :- प्रथम खंड प्रतिष्ठा इतिहास
प्रथम पत्र -
एकाई :- दो - सिंधु घाटी की सभ्यता

(2) मोहनजोदड़ो :- यह स्थल 1922 ई० में रखालदास बनर्जी द्वारा खोजा गया। वर्तमान में यह स्थल सिंध (पाकिस्तान) के लरकाना जिले में सिंधु नदी के किनारे स्थित है। मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ है मृतकों का टीला! यहाँ के दुर्ग क्षेत्र में एक सभागार, पुरोहितों का आवास महाविद्यालय तथा महास्नानागार के साक्ष्य मिले हैं मोहनजोदड़ो के भवन पकी ईटों से निर्मित हैं। मकान में आँगन, रसोईघर, कुआँ, स्नानागार आवश्यक रूप से जुड़े होते थे। ये मकान तीन मंजिल तक हो सकते थे, क्योंकि यहाँ से पहले तल्ले पर जाने की सीढ़ी का साक्ष्य मिला है

नगर में प्रवेशद्वार दक्षिण एंव उत्तर की तरफ निर्मित था।

घरका प्रवेशद्वार दक्षिण एंव उत्तर की तरफ निर्मित थे।

घर का प्रवेश द्वार मुख्य सड़क पर नही होकर गली से था।

घर की छत लकड़ी से निर्मित होती है।

यहाँ से उस्तारे में लिपटे सूती कपड़े का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।

यहाँ 16 कमरों का बैरक मिला है।

मैके ने इस बैरक को दुकान कहा है जबकि पिगॉट महोदय ने इसे कुली लाइन कहा है

यहाँ से 10 इंच लम्बी कांसे की एक नर्तकी मिली है।

तिपतिया वस्त्र ओढ़े छड़ी युक्त सेलखड़ी का एक धड़ मिला है

जिसके बाल तेज हवा में उड़ रही हैं

कुम्हार के छः भट्टे का अवशेष मिला है।

एक श्रृंगी पशु आकृति वाले मुहर प्राप्त हुए हैं

हाथी का कपाल खंड प्राप्त हुआ है।

सीलखड़ी का बाट, खिलौनों में तार पर ऊपर-नीचे होने वाले खिलौने, हाथ हिलाने वाले बंदर, गिलहरी तथा तीन बेकर प्राप्त हुए हैं।

यहां के स्मारकों में गोल स्तंभ का पूर्णतया अभाव है।

यहां पर सड़क को पक्की करने का साक्ष्य मिला है जो पूरी हड़प्पा सभ्यता में एक मात्र ऐसा उदाहरण है।

नाव के चित्रयुक्त बर्तन तथा हड्डी से बनी सुई प्राप्त हुई है

पद्मासन मुद्रा में हाथ में ढोल तथा वीणा लिये हुए पुरुष का साक्ष्य प्राप्त हुआ है

एक मुहर पर बर्छे से भैंसों पर वार करते हुए मनुष्य का ऐसा चित्र है मानो शिव द्वारा दुंदुभी राक्षस को मारा जा रहा है।

HR क्षेत्र में वेदिका युक्त वृक्ष का चित्रण मिला है।

यहां की अधिकांश जातियां भूमध्यसागरीय प्रतीत होती हैं

यहां से 1200 मुद्राओं की प्राप्ति हुई है।

(3) लोथल :- गुजरात के अहमदाबाद जिले में भोगवा नदी के किनारे खम्भात की खाड़ी के निकट स्थित इस आयताकार

स्थल की खोज 1951 में रंगनाथ राव ने की थी। लोथल का अर्थ है मुर्दों का नगर पूरे सिंधु सभ्यता का यह एक मात्र ऐसा स्थल है! जहाँ से गोदीवाड़ा (डाकयाई) का साक्ष्य मिला है जिसका आकार 214मी॰×36मी॰ ×3.3मी॰ गहराई है। लोथल के शहर का विभाजन दुर्ग तथा निचले शहर में नही है। यहाँ से वृत्ताकार तथा चौकोर अग्नि वेदिका के साक्ष्य मिले है!

यहाँ से बर्तन के टुकड़ों पर लगे हुए चावल के दाने प्राप्त हुए है साथ ही बाजरे की भी प्राप्ति हुई है!

यहाँ से तीन युग्मित समाधि मिली है! साथ ही एक ममी का उदाहरण भी मिला है जिसे मिस्र के संपर्क का परिणाम माना जा सकता है! एक मकान का दरवाजा मुख्य सड़क की ओर खुलने का साक्ष्य मिला है!

यहाँ से अनाज पीसने की चक्की तथा मनका का बनाने का कारखाना मिला है। यहाँ से सूती वस्त्र तथा रंगाई के कुंड भी प्राप्त हुए हैं। यहाँ से पूरा हाथी दांत प्राप्त हुआ है!

यहाँ से मिट्टी से बनी दो पशु आकृतियाँ, गोरिल्ला के अंकन वाली मुद्रा तथा बारह सिंघे के अंकन वाली मुहर प्राप्त हुई है। साथ ही दो मुँह राक्षस के अंकन वाली फारसी मुद्रा भी प्राप्त हुई है।

यहाँ के मुहरो तथा बर्तनों पर बत्तख का चित्रण सर्वाधिक है।

एक मृदभांड पर पंचतंत्र की चालक लोमड़ी का अंकन हुआ है।

यहाँ से एक खिलौना ऐसा मिला है, जिसमें एक व्यक्ति को दो पहियों पर खड़ा दिखाया गया है। यहाँ से सांप के चित्रण वाली कुछ मुद्रा मिली है। बटन के आकार की एक मुद्रा भी प्राप्त हुई है।

(5) कालीबंगा :- कालीबंगा वर्तमान राजस्थान राज्य के जिले में लुप्त हो चुकी घग्घर नदी के किनारे स्थित है। यहाँ दोनों टीले सुरक्षा दिवारो से घिरे थे।

कालीबंगा का शाब्दिक अर्थ है काले रंग की चूड़ियाँ। यहाँ से प्राक्-हड़प्पा तथा विकसित हड़प्पा दोनों चरणों के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

इसका उत्खनन 1953 मे अमलनंद घोष के नेतृत्व में तथा

तथा 1960 में बी०के० थापर के नेतृत्व में हुआ। कालीबंगा के दुर्ग का आकार वर्गाकार है। ईंट के चबूतरे पर सात हवनकुंड का साक्ष्य मिला है। सिर्फ नाली के रूप में लकड़ी का पाइप मिला है।

यहाँ से जुते हुए खेतों के साक्ष्य मिले हैं परंतु यह प्राक् हड़प्पा काल का है! इनके अनुसार कम दूरी पर चना तथा अधिक दूरी पर सरसों बोया जाता था। फर्श को पक्की करने का साक्ष्य मिला है, तो अलंकृत ईंटों से होता था। कालीबंगा के दोनों खंड दुर्गीकृत हैं।

यहाँ से प्राप्त बेलनाकार मुहरें मेसोपोटामिया से प्राप्त मुहरों के समरूप थी। कालीबंगा के मकान कच्ची ईंटों से निर्मित हैं इनमें एक पल्ले वाले किवाड़ लगाये जाते हैं।

यहाँ की एक मुद्रा पर व्याघ्र का अंकन है। कपड़े में लिपटा एक उस्तरा मिला है तथा मिट्टी का एक पैमाना मिला है।

एक मृदभाण्ड पर एक ओर सींग वाले देवता तथा दूसरी ओर एक बकरी जिसे एक पुरुष ला रहा है।

का चित्रण है। एक बालक के शव का कपाल खंड मिला है। जिसमें छः छेद है, यह शल्य चिकित्सा का प्रमाण है संभवतः यह स्थल भूकंप से नष्ट हुआ लगता है जो कि ऐसे विवर्तनिक परिवर्तन का प्राचीनतम साक्ष्य है। यहाँ से आठ मुद्राओं की प्राप्ति हुई है।

(5) चान्हुदड़ो (सिंध): 1931 में एन० जी मजूमदार के प्रयास से इस स्थल की खोज हुई। 1935 में मैके ने इस कार्य को आगे बढ़ाया। वर्तमान में यह स्थल सिंध में मोहन जोदड़ो से 130 किमी० दक्षिण में बायें किनारे पर स्थित है। यहाँ से संस्कृति के तीन चरण (प्राक, विकसित तथा उत्तर हड़प्पा) के साक्ष्य मिले है। इस सभ्यता का विनाश बाढ़ से हुआ लगता है।

यहाँ से दो बड़े जार मिले हैं जिन पर प्रतिच्छेदीवृत निर्मित है

यहाँ से मनके बनाने का कारखाना मिला है।